[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3230

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

"विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता : एक अध्ययन" (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संदर्भ में)

ज्योति ढोले
सहायक प्राध्यापक (भूगोल), शासकीय महाविद्यालय धरमपुरी जिला धार

सारांश
आज हम 21वीं सदी मे प्रवेश कर चुके है, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इस प्रगति ने जहां एक और ब्रह्माण्ड के अनेक रहस्यों को सुलझाया है । वही दूसरी और मानव का अनेकानेक सुख सुविधाएं प्रदान की है। इन मानवीय प्रगति एवं विकास मे पर्यावरण तो सदैव सहायक रहा है, परन्तु इस विकास की दौड़ मे हमने पर्यावरण की उपेक्षा की और उसका अनियन्त्रित शोषण किया है। तात्कालिक लाभों के लालच मे मानव ने स्वयं अपने भविष्य को दीर्घकालीन संकट मे डाल दिया है। परिणामस्वरूप जीवन के स्त्रोत पर्यावरण का अवनयन होता जा रहा है। इसी परिपेक्ष्य मे यह परियोजना कार्य प्रस्तुत है। भारत का सर्वोच्च न्यायालय यह महसूस करता है कि भारत का हर नागरिक पर्यावरण जानकारी व जवाबदारी को समझे व पर्यावरण सुधार संबंधी सुझाव दे । शोध कार्य में देव निदर्शन (Sampling Method) प्रणाली का प्रयोग कर प्रश्नावली भरवाकर प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया गया तथा विश्वविद्यालय का सर्वेक्षण कर जानकारी प्राप्त की गई। शोध कार्य हेतु प्राथमिक के साथ–साथ द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया। कार्यक्षेत्र का चयन हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पांच विभागों (आर्टस्, कॉर्मस, साईंस, कम्प्यूटर व अन्य विभागों) का चयन कर प्रत्येक विभाग के 5–5 विद्यार्थियों से प्रश्नावली भरवाई जाकर आंकड़े प्राप्त किये गये है। पर्यावरण समस्या एवं समस्या से निदान पाने सम्बन्धि जागरूकता को समझने के लिए प्रश्नावली तैयार की गई। समस्या से संबंधित निष्कर्ष एवं सुझाव दिए गए है।

शब्द कुंजी– विद्यार्थी एवं पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरण जागरूकता।

प्रस्तावना

आज हम 21वीं सदी मे प्रवेश कर चुके है, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इस प्रगति ने जहां एक और ब्रह्माण्ड के अनेक रहस्यों को सुलझाया है। वही दूसरी और मानव का अनेकानेक सुख सुविधाएं प्रदान की है। इन मानवीय प्रगति एवं विकास मे पर्यावरण तो सदैव सहायक रहा है, परन्तु इस विकास की दौड़ मे हमने पर्यावरण की उपेक्षा की और उसका अनियन्त्रित शोषण किया है। तात्कालिक लाभों के लालच मे मानव ने स्वयं अपने भविष्य को दीर्घकालीन संकट मे डाल दिया है।

पर्यावरण शब्द अंग्रेजी के 'Environment' का हिन्दी अनुवाद है, जो दो शब्दो 'Environ' तथा 'ment' से मिलकर बना है। इसका अर्थ क्रमशः घेरना तथा आस–पास होता है। अर्थात् पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ आसपास से घिरा हुआ।

मानव समाज का विकास स्वच्छ एवं सुन्दर पर्यावरण पर निर्भर है। यदि मानव समाज मे स्वच्छ एवं सुन्दर पर्यावरण नहीं होगा तो अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। अतएव विद्यार्थियों को सुन्दर पर्यावरण प्रदाय करना आवश्यक है। इसलिए विद्यार्थियों का पर्यावरण के प्रति जागरूक होना जरूरी है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमने विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। पर्यावरण शिक्षण विद्यार्थियों मे पर्यावरण की जानकारी संसाधनो का समपोषित विकास तथा पर्यावरण के प्रति उनकी जिम्मेदारी की भूमिका निभाता है।

उद्देश्य

(1) विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों मे पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
(2) विभिन्न विभागों में पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
(3) विद्यार्थियों द्वारा पर्यावरण बचाव के लिए किए जाने वाले प्रयासों को जानना।
(4) प्राप्त निष्कर्ष से पर्यावरण समस्या कम करने के उपाय ।

शोध –क्षेत्र

हमारे द्वारा परियोजना का कार्य क्षेत्र हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय परिसर लिया गया हैं। विश्वविद्यालय का विस्तार 30^0 6′ मिनट उत्तरी अक्षांश 77^0 3′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। समुद्र सतह से इसकी ऊंचाई 2100 मीटर है।

आंकड़ो का विधितंत्र/एकत्रण

हमारे द्वारा शोध कार्य में देव निदर्शन (Sampling Method) प्रणाली का प्रयोग कर प्रश्नावली भरवाकर प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया गया तथा विश्वविद्यालय का सर्वेक्षण कर जानकारी प्राप्त की गई। हमारे द्वारा परियोजना कार्य हेतु प्राथमिक के साथ–साथ द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया। कार्यक्षेत्र का चयन हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पांच विभागों (आर्टस्, कॉर्मस, साईंस, कम्प्यूटर व अन्य विभागों) का चयन कर प्रत्येक विभाग के 5–5 विद्यार्थियों से प्रश्नावली भरवाई जाकर आंकड़े प्राप्त किये गये है। पर्यावरण समस्या एवं समस्या से निदान पाने सम्बन्धि जागरूकता को समझने के लिए प्रश्नावली तैयार की गई जिसमें मुख्य रूप से पर्यावरण के बारे में जानना,, वनों का महत्व, वृक्षारोपण, पानी की समस्या, इत्यादि को प्रश्नावली में शामिल किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से उत्तारदाताओं के उत्तर प्राप्त करने के बाद प्राप्त आकड़ों से सामुहिक एवं विभागवार तालिकाएं बनाकर उनका विश्लेषण किया गया ।

तालिका क्र.–01
पानी की समस्या से जूझने वाले विद्यार्थी

क्र0	विभागों के नाम	हां	नहीं	हां	नहीं
1	कला संकाय	4	1	80 प्रतिशत	20 प्रतिशत
2	वाणिज्य संकाय	1	4	20 प्रतिशत	80 प्रतिशत
3	विज्ञान संकाय	5	0	100 प्रतिशत	–
4	कम्प्यूटर	3	2	60 प्रतिशत	40 प्रतिशत
5	अन्य	5	0	100 प्रतिशत	60 प्रतिशत

तालिका से स्पष्ट है कि पानी की समस्या से कला संकाय के 80 प्रतिशत, वाणिज्य विभाग से 20 प्रतिशत, कम्प्यूटर संकाय से 60 प्रतिशत विद्यार्थी जूझ रहे हैं वहीं विज्ञान एवं अन्य क्षेत्र के 100 प्रतिशत विद्यार्थी पानी की समस्या से जूझ रहे हैं। कला, वाणिज्य तथा कम्प्यूटर विभाग के क्रमशः 20 प्रतिशत, 80 प्रतिशत तथा 40 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे भी है जिन्हें पानी की समस्या से जूझना नहीं पड़ता है ।

तालिका क्र.–02
सौर ऊर्जा की जानकारी रखने वाले विद्यार्थी

क्र0	विभागों के नाम	हां	नहीं	हां	नहीं
1	कला संकाय	5	0	100 प्रतिशत	–
2	वाणिज्य संकाय	1	4	20 प्रतिशत	80 प्रतिशत
3	विज्ञान संकाय	5	0	100 प्रतिशत	–
4	कम्प्यूटर	5	0	100 प्रतिशत	–
5	अन्य	4	1	80 प्रतिशत	20 प्रतिशत

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि कला, विज्ञान व कम्प्यूटर विभाग के लगभग सभी विद्यार्थी सौर ऊर्जा के बारे में जानते हैं जबकि वाणिज्य व अन्य क्षेत्र के विद्यार्थी क्रमशः 20 व 80 प्रतिशत ही जानते हैं। वाणिज्य के 80 प्रतिशत तथा अन्य क्षेत्र के 20 प्रतिशत विद्यार्थी सौर ऊर्जा के सम्बन्ध में अपरिचित हैं।

तालिका क्र.–03
जल बचाने के प्रयास करने वाले विद्यार्थी

क्र0	विभागों के नाम	हां	नहीं	हां	नहीं
1	कला संकाय	4	1	80 प्रतिशत	20 प्रतिशत
2	वाणिज्य संकाय	4	1	80 प्रतिशत	20 प्रतिशत
3	विज्ञान संकाय	4	1	80 प्रतिशत	20 प्रतिशत
4	कम्प्यूटर	5	–	100 प्रतिशत	–
5	अन्य	5	–	100 प्रतिशत	–

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कला, वाणिज्य व विज्ञान संकाय के 80 प्रतिशत विद्यार्थी जल को बचाने के प्रयास करते हैं तथा 20 प्रतिशत विद्यार्थी जल को बचाने में रूची नहीं लेते हैं तथा कम्प्यूटर व अन्य क्षेत्र के विद्यार्थियों के उत्तर से पता चलता है कि वे 100 प्रतिशत अर्थात् पूर्ण रूप से जल को बचाने के प्रयास करते हैं।

तालिका क्र.–04
पॉलिथिन एवं यातायात से होने वाले हानिकारक प्रभाव की जानकारी रखने वाले विद्यार्थी

क्र0	विभागों के नाम	हां	नहीं	हां	नहीं
1	कला संकाय	5	0	100 प्रतिशत	–
2	वाणिज्य संकाय	4	1	80 प्रतिशत	20 प्रतिशत
3	विज्ञान संकाय	5	0	100 प्रतिशत	–
4	कम्प्यूटर	5	0	100 प्रतिशत	–
5	अन्य	5	0	100 प्रतिशत	–

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि कला, विज्ञान, कम्प्यूटर व अन्य क्षेत्र के सभी विद्यार्थी पॉलिथीन एवं यातायात से होने वाले हानिकारक प्रभावों को जानते हैं जबकि कॉमर्स विभाग के 20 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे हैं जो हानिकारक प्रभावों को नहीं जानते हैं।

तालिका क्र.–05
पर्यावरण संरक्षण को जानने वाले विद्यार्थी

क्र0	विभागों के नाम	हां	नहीं	हां	नहीं
1	कला संकाय	5	–	100 प्रतिशत	–
2	वाणिज्य संकाय	5	–	100 प्रतिशत	–
3	विज्ञान संकाय	5	–	100 प्रतिशत	–
4	कम्प्यूटर	3	2	60 प्रतिशत	40 प्रतिशत
5	अन्य	5	–	100 प्रतिशत	–

उपरोक्तानुसार स्पष्ट है कि कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा अन्य क्षेत्र के सभी विद्यार्थी पर्यावरण संरक्षण के बारे में जानकारी रखते हैं जबकि कम्प्यूटर विभाग के 40 प्रतिशत विद्यार्थी आज भी पर्यावरण संरक्षण के बारे में अपनी जागरूकता दिखाने में असमर्थ दिखाई दिये।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि पर्यावरण, वनों का महत्व, वृक्षारोपण के महत्व तथा प्रदूषण के बारे में सभी क्षेत्र के विद्यार्थी जानते हैं जबकि

- आर्टस् विभाग के 80 प्रतिशत विद्यार्थी पानी की समस्या से जूझ रहे हैं वहीं 20 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे भी हैं जो जल बचाने का प्रयास भी नहीं करते।
- वाणिज्य विभाग के मात्र 20 प्रतिशत विद्यार्थी पानी की समस्या से जूझ रहे हैं तथा 20 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे भी हैं जो पानी को बचाने के प्रयास नहीं करते हैं।
- सौर ऊर्जा, भूमण्डलीय तापमान, ओजोन क्षरण, अम्लीय वर्षा तथा पॉलिथीन से होने वाली हानि के बारे में वाणिज्य विभाग के विद्यार्थी पिछड़े नजर आये हैं।
- विज्ञान संकाय के सभी विद्यार्थी पानी की समस्या से जूझते हैं तथा 20 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे भी हैं जो पानी को बचाने का प्रयास नहीं करते हैं। वहीं 20 प्रतिशत विद्यार्थी भूमण्डलीय तापमान से होने वाली समस्या के बारे में भी नहीं जानते।
- कम्प्यूटर विभाग के विद्यार्थी में मृदा अपरदन, ओजोन क्षरण, अम्लीय वर्षा, पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित जानकारी का कुछ प्रतिशत अभाव पाया गया है। साथ ही 60 प्रतिशत ऐसे विद्यार्थी भी हैं जो पानी की समस्या से जूझ रहे हैं।

वर्तमान समय मे देश के कई राज्य पर्यावरणीय समस्यों से जुझ रहे है। विश्लेषण से ज्ञात होता है कि हिमाचल की जनता पर्यावरण के प्रति सजग है इसलिए यहां प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित है, परन्तु यदि पर्यावरण संरक्षण में लापरवाही बरती गई तो हो सकता है कि आने वाली पीढी प्रकृति की खुबसुरती से वंचित रह जाए। अतः आवश्कता है कि पर्यावरण को संजोए रखने की उसे बचाए रखने की इस हेतु निम्न उपाय अपनाए जा सकते है–

सुझाव

(1) शासन को शिक्षण संस्थाओं मे वर्कशाप, पर्यावरणीय कार्यशाला एवं सेमीनार हेतू आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई जानी चाहिए जिससे विद्यार्थियों की सहभागिता से पर्यावरण जागरूकता फैलेगी ।

(2) पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम मे अनिवार्यतः लागू कर देना चाहिए।

(3) पर्यावरण जागरूकता के माध्यमों को बढ़ावा देना।

(4) विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों से पर्यावरण संबंधित परियोजना कार्य करवाना चाहिए। जिससे वे पर्यावरण की वास्तविक समस्याओं एवं उनके उपायों के बारे में जान पाएगें।

(5) टुटी पानी की पाईप लाईनों तथा पानी की टंकी को ठीक करवाना

(6) विश्वविद्यालय परिसर में कचरा पेटियों की संख्या बढ़ानी चाहिए जिससे कचरा बिखरा नजर न आए। विश्लेषण से ज्ञात होता है कि हिमाचल की जनता पर्यावरण के प्रति सजग है इसलिए यहां प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित है, परन्तु यदि पर्यावरण संरक्षण में लापरवाही बरती गई तो हो सकता है कि आने वाली पीढी प्रकृति की खुबसुरती से वंचित रह जाए। अतः आवश्कता है पर्यावरण को संजोए रखने की उसे बचाए रखने की।

संदर्भ

1. *पर्यावरण एवं वन विकास, डॉ. एस.पी. मिश्रा, आविष्कार, पब्लिसर्स जयपुर, 2001*
2. *पर्यावरणीय समस्याएं, डॉ. रामकुमार गुर्जर, पोइन्टर, पब्लिसर्स*
3. *देश का पर्यावरण, गोपी भांति प्रतिष्ठान जयपुर, 2000*
4. *पर्यावरण भूगोल, डॉ. बिठ्ठल घारपुरे, नई दिल्ली 2002*